“कान जो नहीं सुनता और आँख जो नहीं देखती — यहोवा ने दोनों
बनाए।” (नीतिवचन 20:12)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

इस पद का अर्थ क्या है?

यह पद हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर सब चीज़ों के निर्माता हैं, और हमारी इन्द्रियाँ भी उनकी सृष्टि का हिस्सा हैं। हर इन्द्रि को एक खास उद्देश्य के लिए बनाया गया है। जैसा लिखा है:

“कान जो सुनता है और आँख जो देखती है — यहोवा ने दोनों
बनाए।” (नीतिवचन 20:12)

ध्यान दें कि यहाँ “कान जो नहीं सुनता” और “आँख जो नहीं देखती” पर जोर है। इसका मतलब है कि हर इन्द्रि की अपनी अलग और अनोखी भूमिका होती है — कान देख नहीं सकता, और आँख सुन नहीं सकती।

यह हमें बताता है कि परमेश्वर ने सृष्टि में जानबूझकर विविधता बनाई है। हर अंग और हर भाग अपने विशेष कार्य के लिए बना है, जो परमेश्वर की बुद्धिमत्ता और योजना को दिखाता है (भजन संहिता 139:14)।

सृष्टि में यह विविधता यह भी दर्शाती है कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान और उद्देश्यपूर्ण हैं। उन्होंने सब कुछ अलग-अलग बनाया, लेकिन सब उनकी सत्ता के अधीन एकजुट है (कुलुस्सियों

“कान जो नहीं सुनता और आँख जो नहीं देखती — यहोवा ने दोनों
बनाए।” (नीतिवचन 20:12)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

1:16)। जैसे परमेश्वर ने लोगों को अलग-अलग रंग-रूप, आकार और जाति में बनाया — कुछ अफ्रीकी, कुछ एशियाई — उसी तरह मसीह के शरीर में भी अलग-अलग उपहार और जिम्मेदारियाँ दीं।

कलीसिया में, परमेश्वर हर विश्वासी को अलग-अलग आध्यात्मिक उपहार देते हैं ताकि वे समुदाय की सेवा पूरी निष्ठा और प्रभावी ढंग से कर सकें। जैसा पौलुस ने लिखा है:

“उपहार भिन्न-भिन्न हैं, पर वही आत्मा उन्हें बाँटता है।
सेवा के प्रकार अलग हैं, पर वही प्रभु है। कार्य के प्रकार
अलग हैं, पर सब में और सभी में वही परमेश्वर कार्य करता है।”
(1 कुरिन्थियों 12:4-6)

यह हमें सिखाता है कि उपहारों और भूमिकाओं की विविधता कलीसिया के निर्माण के लिए है (इफिसियों 4:11-13)। ये अंतर मतभेद या विवाद का कारण नहीं बनना चाहिए। बल्कि इसे परमेश्वर की पूर्ण योजना का हिस्सा मानकर स्वीकार करना चाहिए।

इसलिए, जब हम विश्वासियों के बीच अंतर या मंत्रालय के अलग तरीकों को देखें, तो हमें परमेश्वर के काम पर सवाल नहीं उठाना चाहिए और न ही भूमिकाओं की तुलना करनी चाहिए। हर विश्वासी का

“कान जो नहीं सुनता और आँख जो नहीं देखती — यहोवा ने दोनों
बनाए।” (नीतिवचन 20:12)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

योगदान अनमोल है और परमेश्वर की महिमा के लिए बनाया गया है।

याद रखें:

“कान जो नहीं सुनता और आँख जो नहीं देखती — यहोवा ने दोनों बनाए।” (नीतिवचन 20:12)

परमेश्वर ने आपको जो विशेष बुलावा दिया है, उसे पहचानें। उसमें दृढ़ रहें, और यह जानकर आगे बढ़ें कि हर उपहार और हर अंतर अंततः परमेश्वर की बुद्धिमत्ता और महिमा को दर्शाता है।

प्रभु आपको अपने आशीर्वादों से भरपूर करें।

Share on:
WhatsApp